माँ की ममता अनमोल है

निकिता बेदी

निकिता बेदी
2/15,भोगल, जंगपुरा एक्सटेंशन,
नई दिल्ली-110014
दूरभाष:9311178317

प्रथम संस्करण : 2010 मुल्य:20/-

परिचय

मैं निकिता बेदी एक छात्रा हूँ। मैं अभी सिर्फ ११ कक्षा में हूँ और मेरा स्कूल दिल्ली में वसंत कुंज में है। मेरे स्कूल का नाम है - भटनागर इंटरनेशनल स्कूल। यह किताब मेरी पहली किताब है। लेकिन में अखबारों में लिखती रहती हूँ।

आज, अगर मैं यह किताब लिख पाई हूँ तो वो सिर्फ मेरी अध्यापिका की वजह से मेरी स्कूल की प्रधनाचार्य श्रीमती अरविन्द बेदी जी जिनके कारण मैं कुछ बन पाई हूँ। और मेरे माता पिता जिन्हों ने मुझे इतने अच्छे गुण डाले की मैं अपनी ज़िंदगी में आगे बढ़ पाई।

और भी लोग हैं जो मेरे दिल के बहुत निकट हैं जिनके कारण मैनें यह किताब लिखी।

यह किताब है उस माँ पर जिस ने सारी ज़िंदगी अपने बच्चों के लिए बिता दी।पर वो बच्चे उस माँ की कदर ना कर पाए।

इस किताब को पढ़ कर ही आप सभी को ज्ञात होगा की एक माँ बच्चों के जीवन में ना हो तो बच्चों के जीवन में सिर्फ अंधकार ही अंधकार होता है। माँ की ममता को पहचानो तभी पता चलेगा माँ की माँ से बढ़ा इस संसार में कोई नहीं है।

निकिता बेदी

माँ की ममता अनमोल है

माँ एक ऐसा शब्द है जो इस संसार में सबसे अनमोल है। एक माँ के लिए सबसे प्रिय होती है उसकी संतान अगर उस पर कोई आंच भी आ जाए तो माँ बिल्कुल सहन नहीं कर पाती। माँ तो वो करुणा और बलिदान की मूर्ति है जिस का दिल हमेशा अपने बच्चों के लिए नरम रहता है। माँ दुनिया की सारी खुशियां अपने बच्चों पर न्योंछावर कर देती है चाहे उस के लिए उसे कितना भी दुख क्यों ना देखना पड़े। अगर कभी भी बच्चों पर कोई परेशानी आती है तो सबसे पहले उसका सामना माँ ही करती है। अपने बच्चों के लिए वो हमेशा चट्टान की तरह खड़ी रहती है।

एक माँ जो इतना सब कुछ अपने बच्चों के लिए करती है वो माँ जो अपनी जान खतरे में डाल कर अपने बच्चे को जन्म देती है। तो फिर क्यों उस माँ को आज भी इस दुनिया में दुख उठाना पड़ता है क्यों वो माँ अपनों के लिए परायी हो जाती है। आज मुझे यह देख कर बहुत ही दुख होता है की जिस औरत ने अपने अंश को जन्म दिया वही अंश उसकी कदर नहीं करता। वही उस माँ को आरोपी और दोषी कहता है।

क्यों आखिर क्यों होता है उस देवी के साथ ऐसा? क्यों इस युग में माँ को वो सम्मान और आदर नहीं मिलता जिस की वो हकदार है।

आज मैं आप सब को वो बात बताना चाहती हूँ जो मैनें अपनी किशोरावस्था में देखी और वो बात मुझे अब भी याद है।

एक स्त्री है जो अपनी जिन्दगी के अंतिम पड़ाव में है।

परन्तु, आज भी उस औरत को सिर्फ दुख का ही सामना करना पड़ रहा है और वो भी अपनी संतान को ले कर ही।

उस स्त्री के चार बच्चे हैं जिसमें से दो बेटिया हैं दो बेटे हैं उस स्त्री ने अपनी पूरी जवानी सिर्फ अपने बच्चों की देख-रेख में व्यतीत कर दी उसने वो सारे सुख अपने बच्चों को देनें चाहे जो वो दे सकती थी। और देखते ही देखते उस स्त्री के बच्चों ने भी अपनी युवावस्था में कदम रख दिया। उस स्त्री की सबसे बड़ी बेटी की तो शिक्षा पुरी हो गई थी और उस बेटी की शादी का भी समय आ गया था परन्तु, उस स्त्री के बड़े बेटे ने शिक्षा पूरी तरह खत्म नहीं करी और वो छोटी उम्र में ही कमाने लग गया। और उनका छोटा बेटा वो एक होनहार विद्यार्थी था अपनी विद्या से ही वो छोटी सी उम्र में वयो सेना में प्रवेश कर गया।

उनकी सबसे छोटी बेटी जिनसे मेरी बातचीत होती ही रहती है वो अपनी स्कूली शिक्षा पूरी नहीं कर पाई और किसी कारण वर्ष हेतु उनका विवाह बालिक होते ही कर दिया गया।

अब कुछ वर्षों के बाद उन के बड़े बेटे का भी विवाह कर दिया गया और कुछ पांच वर्षों के बाद ही उनके छोटे बेटे का विवाह भी हो गया।

अब उनके छोटे बेटे की आर्थिक स्थिति बहुत ही अच्छी हो गई थी परन्तु, इस कारण से उनके घर में घरेलू समस्या का प्रारम्भ हो गया। आये दिन हर रोज़ कोई बात होती रहती थी। और इन सब का कारण था की छोटा बेटा ज़्यादा कमाता है और बड़ा बेटा इतना अमीर नहीं है।

मुसीबत का जैसे कहर आने वाला हो उस औरत के लिए दोनों बेटे अपनी माँ को कहते की तुमने हमारे साथ किया ही क्या है आज तक हमने गरीबी में अपनी जिन्दगी काटी है और अभी इतना ही नहीं था उस माँ के लिए परन्तु अभी तो शब्द के और बाण चलने थे उस माँ की ममता पर और अब बड़ा बेटा कहता की बचपन से ही तुमने माँ मुझसे ज्यादा अपने छोटे बेटे को प्यार दिया। आज तक तुमने मुझ पर ध्यान ही नहीं दिया क्या किया है तुमने आज तक मेरे लिए।

माँ के दिल को रुला दिया उसके अपने ही बच्चों ने अब माँ को ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वो अपन बच्चों की सबसे बड़ी दुशमन हो।

अब बात आई दोनों बेटियों पर उस माँ की किस्मत में थोड़ी-सी सुख की रेखा थी जो उस को दोनों ही बेटिया बहुत अच्छी मिली। अब तो दोनों ही विवाहित थी परन्तु, दोनों की संतान तो थी पर वो भी बेटिया ही थी।

अब इतने सालों बाद कुछ खुशी आई थी छोटी बेटी के घर की वो ११ सालों बाद फिर से माँ बनने वाली थी। उस औरत के लिए भी बहुत खुशी का दिन था क्योंकि उसकी बेटी के घर फिर एक संतान होने वाली थी और फिर एक दिन पता चला की बेटी के घर एक बेटे ने जन्म लिया है। उस औरत के लिए चारों तरफ खुशी का वातावरण था।

परन्तु, यह खुशी उस औरत के लिए कुछ दिनों की थी १३ दिनों बाद उनकी बेटी के घर नाम करण का दिवस था और समस्त परिवार उनका छोटा बेटा भी गया था उसी समय ना जाने कुछ ऐसा हुआ की उस औरत का छोटा बेटा और छोटी बेटी के बीच कोई बात हो गई। और आज भी उसी कारण से वो दोनों बात नहीं करते ना ही दोनों का कोई दूर दूर तक कोई वार्तालाप होता है।

असली बात तो यह है की यह सब प्रारम्भ हुआ था उस औरत के बिमार हो जाने पर जब छोटी बेटी के घर इतने सालों के बाद खुशियाँ ने दस्तक दी थी तब अचानक ही उनकी माँ बीमार रहने लगी। और एक दिन उस औरत का दामाद उनके घर उनका हालचाल पूछने आये तभी उन्होंने देखा जो बहुत ही चूका देने वाला हादसा था। उस औरत की अवस्था बहुत ही खराब थी उनका कोई भी बेटा वहां उनके पास नहीं था इसलिए उनके दामाद ने उनको जल्दी ही हॉस्पिटल में भर्ती करवाया। और सारा इलाज करवाया परन्तु अब प्रारम्भ हुआ गलत फैमियों का सिलसिला। छोटा बेटा जब विदेश से आया तब उस ने अपनी माँ से कहा की आप को क्या ज़रूरत थी अपने दामादजी से इलाज के पैसे लेने की आप का बड़ा बेटा भी तो था और मैं भी तो था मुझे एक फोन कर देती तो में विदेश से पैसे भेज देता। और अब छोटे बेटे की बहस हो गई अपने भाई-बहन से। और इसी सब के चलते आज भी उस औरत के छोटा बेटा और बेटी अभी भी बात नहीं करते

यहाँ तक रिशतों में दरार पड़ गई है की वो दोनों राखी और भैया दूज पर भी नहीं मिलते। और सुनने में तो यह भी आया था की पिछले दिनों भाइयों में भी दरार पड़ना प्रारम्भ हो गई है।

और अब देखा जाए तो उस औरत का घर बिल्कुल खत्म हो गया है जिस माँ ने अपनी पूरी जवानी कुर्बान कर दी अपने बच्चों को पालने के लिए आज वही बच्चे उनके ज़िन्दगी में रोशनी के बजाए अंधेरा कर रहे हैं।

जिस माँ को उन्हें प्यार और सम्मान के साथ रखना चाहिए वही बच्चे उन्हें बुरा-भला कहते हैं। क्यों होता है एसा क्या नहीं है इस युग में कोई संतान जो कर सके अपनी माँ की तन और मन से सेवा?आज मैं यह कहना चाहती हूँ की इस संसार मैं सबसे पहले भगवान की अराधना करी जाती है। क्योंकि प्रभु को सबसे परम शक्ति माना जाता है।

पर समस्त देवी - देवता भी अपने से ऊपर दर्जा माँ को देते। वो भी तभी खुश होते है जब बच्चे उन से पहले अपने माता पिता को पूजे। माँ से बड़ी कोई शक्ति इस संसार में नहीं है और ना कोई होगी हमारी माँ ही हमारे लिए भगवान है, तो जिसने माँ की सेवा कर ली वो ही प्रभु का असली भक्त है।

इस पाठ में मैं यह बताना चाहती हूँ की बच्चे माँ के साथ कितना भी बुरा व्यवहार क्यों ना कर लें माँ ममता हमेशा उनके लिए अनमोल रहती है। तो माँ की ममता को पहचानों और उस ममता की देवी की पूजा करो। यही है इस पाठ का उद्देश अपनी माँ की भावना की कदर करना।

निकिता बेदी

मेरी माँ ही मेरा दर्पण

मेरी माँ है सबसे अलग
नहीं है किसी को इसकी भनक

हर पल करती वो है बलीदान
फिर भी रहती उसके मुख पर मुस्कान

माँ में ना जाने क्या है ऐसी बात
क्यों करती है वो इतना सबके लिए

मुझसे जब पूछा सबने
कैसे तुम्हारी माँ है सबसे अलग

मैने कहा की मेरी माँ इसलिए है सबसे अलग
क्योंकि जीती है वो मेरे लिये हर पल

मेरी माँ है सबसे अलग
नहीं है किसी को इसकी भनक

—निकिता बेदी